चूँकि व्यक्तिगत गतिविधियाँ विशेषज्ञों के निरीक्षण में की जाती हैं। अत: प्रबन्धकीय कार्यक्षमता तथा उत्पादकता में व्यापक रूप से सुधार होता है। निर्णयन सत्ता का विकेन्द्रीयकरण ऐसी फर्म में सम्भव हो पाता है जो प्रबन्धकों की कार्यक्षमता तथा उत्पादकता को और अधिक बढ़ाता है। इस प्रकार प्रबन्ध का विशिष्टीकरण बड़ी फर्मों की प्रबन्धकीय लागतों में कमी को सम्भव करा पाता है।

लेकिन जैसे-जैसे उत्पादन का पैमाना एक निर्दिष्ट सीमा के आगे बढ़ता है तो प्रबन्धकीय हानियां आने लगती हैं। ऐसी स्थिति में प्रबन्ध नियंत्रण करने में तथा विभिन्न विभागों के बीच समन्वय लाने में कठिनाई अनुभव करता है। प्रबन्धकीय संरचना अधिक जटिल बन जाती है और अफसरशाही, लालफीताशाही, नीरस, सम्प्रेषण रेखाओं में वृद्धि आदि की शिकार हो जाती है। इन सब बातों से प्रबन्ध की तथा स्वयं फर्म की कार्यक्षमता तथा उत्पादकता प्रभावित होती है।

(*iii*) **वाणिज्यिक मितव्ययिताएं तथा हानियां** (Commercial economies and diseconomies)—बड़ी मात्रा में उत्पादन के लिए पर्याप्त सामग्री तथा उपकरणों की आवश्यकता होती है। इससे फर्म द्वारा सामग्री तथा कल-पुर्जे के बड़े आदेश दिए जा सकते हैं तथा उनके लिए फर्म को कम कीमतें चुकानी पड़ेंगी। उत्पाद को बेचने में भी अनेक मितव्ययिताएँ प्राप्त हो सकती हैं। यदि विक्रय स्टॉक क्षमता तक काम कर रहा है तो अतिरिक्त उत्पाद को कुछ अधिक लागत पर बेचा जा सकता है। इसके अतिरिक्त बड़ी फर्में विज्ञापन की बचतों से लाभ उठा सकती हैं। जैसे-जैसे उत्पादन का पैमाना बढ़ता है उत्पादन की प्रति इकाई विज्ञापन लागत गिरती है। इसके अतिरिक्त एक बड़ी फर्म अपने गौण उत्पादों को भी भली-भांति बेच सकती है जो एक छोटी फर्म के लिए गैर-लाभकारी हो सकते हैं। कुछ मितव्ययताएँ परिवहन एवं भंडारण से भी सम्बन्धित होती है।

ये मितव्ययिताएं एक अनुकूलतम पैमाने के पश्चात् हानियों में बदल जाती हैं। उदाहरण के लिए, विज्ञापन व्यय तथा अन्य विपणन उपरिव्यय अनुकूलतम पैमाने के पश्चात् आनुपातिक रूप से अधिक बढ़ेंगे।

(*iv*) **वित्तीय बचतें तथा हानियाँ** (Financial economies and diseconomies)—एक बड़ी फर्म को छोटी फर्म की तुलना में अपनी व्यावसायिक गतिविधियों के संवर्द्धन हेतु वित्त इकट्ठा करने में सुविधा रहती है। उदाहरण के लिए, वह बैंकर्स को अच्छी जमानत दे सकती हैं और चूँकि ये सुपरिचित होती हैं। अत: अपेक्षाकृत निम्न लागत पर धन एकत्र कर सकती हैं, चूँकि निवेशकों का उनमें विश्वास होता है और वे अंशों को प्राथमिकता देते हैं जिनको बड़ी सरलता से स्टॉक एक्सचेंज में बेचा जा सकता है।

लेकिन उत्पादन के अनुकूलतम पैमाने के पश्चात् वित्तीय लागतें आनुपातिक रूप से अधिक बढ़ेंगी। ऐसा इस कारण हो सकता है क्योंकि वह बाहरी वित्त पर बहुत अधिक निर्भर होती हैं। अत: एक बड़ी फर्म कम लागत पर पूँजी एकत्रित कर सकती है।

(*v*) **जोखिम सम्बन्धी मितव्ययिताएँ एवं अमितव्ययिताएँ** (Risk bearing economies and diseconomies)—ऐसा कहा जाता है कि एक व्यावसायिक प्रतिष्ठान जिसे विविध एवं बहुपदार्थ उत्पादन सामर्थ्य प्राप्त होता है वह आर्थिक उतार-चढ़ावों को झेलने में अधिक समर्थ होता है और उसे जोखिम उठाने के क्षेत्र में बचतें प्राप्त होती हैं। यद्यपि, विविधीकरण द्वारा जोखिम भी बढ़ सकता है।

बाह्य मितव्ययताऐं तथा हानियां (External Economies and Diseconomies)—आन्तरिक मितव्ययताएँ उत्पादन के अपेक्षाकृत ऊँचे स्तरों पर विशिष्ट मशीनों तथा श्रम के बड़ी मात्रा में विभाजन के उपयोग के कारण किसी भी फर्म द्वारा भोगी जा रही मितव्ययताएँ हैं। ये इन अर्थों में आन्तरिक हैं कि ये अपने प्रयासों के कारण फर्म को उपार्जित होती हैं। आन्तरिक बचतों के अतिरिक्त, अनेक बाह्य मितव्ययिताएं भी हैं जो एक फर्म के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण होती हैं। बाह्य मितव्ययिताऐं तथा हानियां वे बचतें तथा हानियां हैं जो फर्मों को सम्पूर्ण उद्योग में उत्पाद संवर्द्धन के परिणामस्वरूप उपार्जित होती हैं और वे व्यक्तिगत फर्मों के उत्पादन स्तर पर निर्भर नहीं करतीं। वे इस दृष्टि से बाह्य हैं कि वे फर्मों को आन्तरिक परिस्थिति से नहीं मिलती वरन् बाहर से प्राप्त होती हैं जैसे उद्योग का संवर्द्धन।

ये मितव्ययिताएं एक अथवा एक से अधिक फर्मों को निम्न रूप में प्राप्त होती हैं :

(1) **सस्ते कच्चे माल एवं पूँजीगत साधन** (Cheaper raw materials and capital equipment)—एक उद्योग को विस्तार द्वारा नये और सस्ते कच्चे माल के स्रोत की खोज के रूप में सफलता मिल सकती है और अन्य प्रकार की पूँजी सामग्री को खोज भी संभव होती है। एक उद्योग के विस्तार के फलस्वरूप विविध प्रकार के कच्चे माल, और पूँजी साधनों की माँग में वृद्धि होती है जिसकी उद्योग को आवश्यकता होती है। इनको फर्म अन्य उद्योगों से प्रतिस्पर्द्धी मूल्यों पर बड़े पैमाने पर तैयार कर सकती है। यह उनकी उत्पादन लागत को कम कर देता है तथा फलस्वरूप उनके उत्पादन की कीमतें घटती हैं।

© The Institute of Chartered Accountants of India

(2) **तकनीकी बाहरी बचतें** (Technological external economies)–जब पूरे उद्योग का विस्तार होता है तो इसके परिणामस्वरूप नये तकनीकी ज्ञान की खोज होती है और तदनुसार सुधरी हुई और आधुनिक मशीनों का उपयोग करना संभव हो जाता है। यह उत्पादन के तकनीकी गुणाँकों के परिवर्तन में हेतु और उद्योग की फर्मों की उत्पादकता में वृद्धि में सहायक होगा और उद्योग की फर्मों के उत्पादन की लागत पर भी अनुकूल प्रभाव पड़ेगा।

(3) **कुशल श्रम का विकास** (Develpment of skilled labour)–जब किसी क्षेत्र में कोई उद्योग विकसित होता है तब उस क्षेत्र के श्रमिक उत्पादन की विभिन्न प्रक्रियाओं से सुपरिचित होते हैं तथा अनुभव से काफी कुछ सीखते हैं। इसके फलस्वरूप एक क्षेत्र विशेष में उद्योग के विस्तार से प्रशिक्षित श्रम का एक केन्द्र विकसित हो जाता है, जिनके पास आवश्यक योग्यतायें होती हैं जिसका उत्पादकता और फर्मों की लागतों पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है।

(4) **सहायक उद्योगों का विकास** (Growth of Ancillary Industries)–उद्योग का विस्तार अनेक सहायक उद्योगों के विकास को बढ़ावा देता है जो कच्चे मालों, टूल्ज, मशीनरी, हिस्से पुर्जों, मरम्मत सेवाओं, आदि की आपूर्ति तथा उत्पादन में विशिष्टता प्रदान करता है। इनपुट के मूल्य प्रतिस्पर्द्धी बाजार में गिर जाते हैं तथा इसके लाभ घटी हुई उत्पादन लागत के रूप में सभी फर्मों को मिलते हैं। इसी तरह, उद्योग के क्षय उत्पादों के संसाधन या रीसाइकिलिंग के लिए नई-नई इकाइयाँ आ सकती हैं। यह सब आमतौर पर उत्पादन लागत में कमी की ओर उद्यत होगा।

(5) **अच्छी यातायात एवं विपणन सुविधाएँ** (Better transportation and marketing facilities)–एक उद्योग का विस्तार जो नयी फर्मों के प्रवेश के कारण होता है उससे यातायात व्यवस्था के विकास की संभावना बनती है और इसी प्रकार विपणन व्यवस्था का विकास भी होता है और इनसे फर्मों की उत्पादन लागत में बहुत अधिक कमी हो जायेगी। इसी प्रकार संदेशवाहन की प्रणाली को आधुनिक रूप दिया जाता है, जिससे सूचनाएँ अधिक अच्छे ढंग से एवं तीव्र गति से प्रेषित करने में सफलता मिलती है।

(6) **सूचनाओं की मितव्ययता** (Economies of Information)–फर्मों को प्रौद्योगिकी, श्रम, मूल्यों तथा उत्पादों के लिए आवश्यक सूचनाएँ उद्योग संघों द्वारा या जनहित में सरकार द्वारा सूचना बुकलैट्स तथा बुलेटिन्स के प्रकाशन के कारण सरलतापूर्वक तथा सस्ते मूल्य पर उपलब्ध कराई जा सकती हैं।

यदि फर्म में कुछ हानियाँ होती हों तो बाहरी मितव्ययितायें मिलना बन्द हो जाती हैं। ये हानियाँ एक उद्योग के विस्तार से प्राप्त होने वाली मितव्ययिताओं को निष्क्रिय कर देती हैं। बाहरी हानियों के प्रमुख उदाहरण कुछ साधनों की बढ़ती हुई कीमतों के रूप में सामने आते हैं। जब एक उद्योग का विस्तार होता है तो विभिन्न प्रकार के उत्पादन के साधनों की आवश्यकता में वृद्धि होती है। उदाहरण के लिए,सब प्रकार के कच्चे माल, पूँजीगत वस्तुयें, दक्ष श्रमिकों की आवश्यकता इत्यादि। ये सब इन पदार्थों की कीमतों को बढ़ा देती हैं विशेष रूप से जब इनकी पूर्ति कम होती है। इसके अतिरिक्त एक उद्योग की बहुत अधिक फर्में एक स्थान पर हो जाने से यातायात लागतें, विपणन लागतें और प्रदूषण नियंत्रण की लागतें भी बढ़ जाती हैं। सरकार भी अपनी-अपनी स्थानीयकरण नीति के माध्यम से किसी स्थान विशेष पर किसी उद्योग के विस्तार को नियन्त्रित या सीमित कर सकती है।

सारांश (SUMMARY)

- लागत समीक्षा एक या अधिक लागत कसौटियों के सम्बन्ध में लागत के व्यवहार के अध्ययन का संदर्भ लेती है। यह उत्पादन के वित्तीय पहलुओं से सम्बन्धित है।
- लेखांकन लागतें बहिर्मुखी लागतें होती हैं तथा विभिन्न उत्पादकीय घटकों के सप्लायर्स को उपक्रमी द्वारा दिये गये भुगतानों तथा सभी प्रभारों का समावेश करती है।
- आर्थिक लागतें बहिर्मुखी लागतों तथा अन्तर्मुखी लागतों दोनों को ध्यान में रखती हैं। एक फर्म को अपनी आर्थिक लागतों को पूरा करना होता है यदि वह सामान्य लाभ कमाना चाहती है।
- रोकड़ लागतें (आउटले लागतें) कोषों के वास्तविक व्ययों का समावेश करती हैं।

© The Institute of Chartered Accountants of India

- अवसर लागत अगली सर्वोत्तम वैकल्पिक अवसर की लागत से सम्बन्ध रखती है जिसको त्याग दिया गया है ताकि एक निर्दिष्ट गतिविधि की तरफ बढ़ा जा सके।
- प्रत्येक लागतें ऐसी लागतें हैं जिनका गतिविधि के किसी भाग से प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। वे तत्परतापूर्वक पहचानी जाती हैं तथा किसी उत्पाद, गतिविधियाँ संयंत्र विशेष के प्रति चिन्हित करने योग्य होती हैं।
- अप्रत्यक्ष लागतें ऐसी लागतें हैं जिनको किसी संयंत्र, उत्पाद, प्रक्रिया या विकास के सम्बन्ध में सरलतापूर्वक तथा निश्चित रूप से पहचाना न जा सके। वे किसी विशिष्ट माल, सेवा, प्रक्रिया, भाग या गतिविधि के प्रति दृश्य तौर पर चिन्हित करने योग्य नहीं होतीं।
- वृद्धिगत लागत किसी व्यावसायिक निर्णय के परिणामस्वरूप एक फर्म द्वारा की गई अतिरिक्त लागत का संदर्भ लेती है।
- डूबत लागत पहले ही सदा-सदा के लिए लगाई जा चुकी है तथा इसको वसूल भी नहीं किया जा सकता है।
- ऐतिहासिक लागत एक उत्पादकीय सम्पत्ति की अभिप्राप्ति पर विगत में लगाई गई लागत का संदर्भ लेती है।
- प्रतिस्थापन लागत ऐसा मौद्रिक व्यय है जिसको एक पुरानी सम्पत्ति के प्रतिस्थापन हेतु लगाया जाना होता है।
- निजी लागतें फर्म द्वारा वास्तव में लगाई गई या प्रावधान की गई लागतें हैं तथा या तो बहिर्मुखी होती है या अन्तर्मुखी।
- दूसरी ओर, सामाजिक लागतें किसी व्यावसायिक गतिविधि के कारण समाज द्वारा वहन की गई कुल लागत का संदर्भ लेती हैं तथा निजी लागत तथा बाहरी लागत का समावेश करती है।
- लागत कार्य लागत तथा लागत के विभिन्न निर्धारक तत्वों के बीच गणितीय सम्बन्ध का संदर्भ लेता है। यह लागत तथा उत्पादन के बीच सम्बन्ध की अभिव्यक्ति करता है।
- अर्थशास्त्री सामान्यत: दो प्रकार के लागत कार्यों में रुचि लेते हैं, अल्पकालीन लागत कार्य तथा दीर्घकालीन लागत कार्य।
- **अल्पकालीन लागत कार्य हैं**।
- स्थिर या सतत लागतें जो उत्पादन का एक कार्य नहीं होतीं। ये अत्याज्य या अनियंत्रणीय होती हैं।
- परिवर्तनीय लागतें उत्पादन अवधि में उत्पादन का कार्य है।
- अल्पकाल समय की ऐसी अवधि है जिसमें परिवर्तनीय घटकों की मात्रा को ही बदलकर उत्पादन को घटाया या बढ़ाया जा सकता है जैसे श्रम, कच्चा माल, आदि।
- दीर्घकाल समय की एक ऐसी अवधि है जिसमें सभी घटकों की मात्राओं को परिवर्तित किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में, सभी घटक दीर्घकाल में परिवर्तनीय हो जाते हैं।
- अर्द्ध-परिवर्तनीय लागतें न तो पूरी तरह से परिवर्तनीय हैं, न कि पूरी तरह से स्थिर, उत्पादन के आकार में परिवर्तन के सन्दर्भ में।
- चरणबद्ध लागतें (Stair-step Costs) उत्पादन के कतिपय दायरे में स्थिर बनी रहती हैं; लेकिन अचानक एक नये उच्च स्तर पर उछल जाती हैं जब उत्पादन एक निर्दिष्ट सीमा से बाहर जाता है।
- किसी व्यवसाय की कुल लागत को उस वास्तविक लागत के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसे उत्पादन की एक की गई मात्रा के उत्पादन हेतु लगाया जाना चाहिये।
- AFC को उत्पादित उत्पादन की इकाइयों की संख्या से कुल स्थिर लागत को भाग देकर प्राप्त किया जाता है।
- औसत परिवर्तनीय लागत को उत्पादित उत्पादन की इकाइयों की संख्या से कुल परिवर्तनीय लागतों को भाग देकर ज्ञात की जाती है।
- औसत कुल लागत औसत स्थिर लागत तथा औसत परिवर्तनीय लागत का योग होती है।
- सीमान्त लागत उत्पनादन की एक अतिरिक्त इकाई के उत्पादन द्वारा कुल लागत में की गई वृद्धि है।
- उत्पादन की दीर्घकालीन लागत उत्पादन के किसी दिये गये स्तर पर उत्पादन करने की न्यूनतम सम्भव लागत है जब सभी व्यक्तिगत घटक परिवर्तनीय हों।

© The Institute of Chartered Accountants of India

- एक दीर्घकालीन औसत लागत वक्र, बहुधा नियोजन वक्र के रूप में जानी जाती है, ऐसे खींचा जाता है ताकि अल्पकालीन औसत लागत वक्रों में प्रत्येक की स्पर्शी हो जाये।
- LAC वक्र SAC वक्रों के न्यूनतम बिन्दुओं के प्रति स्पर्शी नहीं हैं।
- प्रतिष्ठित साक्ष्य बताता है कि दीर्घकाल में प्रौद्योगिकी की स्थिति में बदलाव आता है। अत: आधुनिक फर्में उत्पादन की एक विचारणीय मात्रा पर L-shaped लागत वक्र का सामना करती हैं।
- पैमाने की मितव्ययताएँ दो प्रकार की होती हैं–पैमाने की बाहरी मितव्ययताएँ तथा पैमाने की आन्तरिक मितव्ययताएँ।
- पैमाने की बाहरी मितव्ययताएँ ऐसे घटकों के कारण एक फर्म ले पाती है जो किसी फर्म के लिए बाहरी होते हैं।
- पैमाने की आन्तरिक मितव्ययताएँ एक फर्म को मिलती हैं जब वह महामात्रा उत्पादन में संलग्न होता है।
- अनुकूलतम स्तर के परे पैमाने में वृद्धि पैमाने की गैर-मितव्ययताएँ ही उत्पन्न करती हैं।

विविध चयन वाले प्रश्न (MULTIPLE CHOICE QUESTIONS)

1. अर्थशास्त्र में निम्न में किसे उत्पादन माना जाता है?
   (अ) मिट्टी की जुताई
   (ब) मित्रों के समक्ष गाना गाना
   (स) सड़क पर एक मेनहोल में गिरने से एक बच्चे को बचाना
   (द) मनोरंजन के लिए एक तस्वीर पेंट करना।
2. सही कथन को चिन्हित करें :
   (अ) औसत उत्पादन अपने चरम पर होता है जब सीमान्त उत्पादन औसत उत्पादन के बराबर हो
   (ब) पैमाने के प्रति बढ़ती प्रत्यायों का सिद्धान्त घटक अनुपातों में परिवर्तनों के प्रभाव से सम्बन्ध रखता है
   (स) पैमाने की मितव्ययताएँ घटक अनुपातों की अविभाज्यता का परिणाम हैं
   (द) पैमाने की आन्तरिक बचतें केवल निर्यात क्षेत्र के प्रति ही उत्पन्न हो सकती हैं।
3. निम्न में से कौन भूमि का एक लक्षण नहीं है?
   (अ) अर्थव्यवस्था के लिए इसकी आपूर्ति सीमित होती है
   (ब) यह अगतिशील होती है
   (स) इसकी उपादेयता मानवीय प्रयासों पर निर्भर करती है
   (द) इसको हमारे पूर्वजों ने उत्पादित किया।
4. निम्न में से कौन सा कथन सत्य है?
   (अ) पूँजी संचय एकमात्र रूप से आय पर निर्भर करता है
   (ब) बचतें भी राज्य द्वारा प्रभावित हो सकती है
   (स) बाहरी बचतें आकार के साथ तथा आन्तरिक बचतें स्थिति के साथ बढ़ती हैं
   (द) श्रम की आपूर्ति वक्र एक उर्ध्वगामी ढलुआँ वक्र है।
5. गेहूँ के उत्पादन में निम्न सभी परिवर्तनीय घटक हैं जिनको किसान द्वारा काम लाया जाता है, सिवाय :
   (अ) प्रयुक्त बीज तथा उर्वरक जब फसल बोयी जाती है
   (ब) ऐसा खेत जिससे पेड़ काटे जा चुके हैं तथा जिसमें फसल बोयी जाती है
   (स) किसान द्वारा रोपण तथा कटाई के लिए प्रयुक्त ट्रैक्टर जो न केवल गेहूँ के लिए है वरन् साथ ही मक्का तथा जौ के लिए भी
   (द) घंटों की संख्या जो किसान गेहूँ के खेतों की खेती में लगाता है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

6. एक परिवर्तनीय इनपुट की सीमान्त उत्पादकता को सर्वोत्तम रूप से निम्न प्रकार समझाया जाता है :
   (अ) कुल उत्पादन जिसे परिवर्तनीय इनपुट की यूनिटों की संख्या से विभाजित किया जाता है
   (ब) परिवर्तनीय इनपुट की एक यूनिट बढ़ाने से उत्पन्न अतिरिक्त उत्पादन
   (स) स्थायी तथा परिवर्तनीय दोनों ही इनपुटों की एक यूनिट बढ़ाने से उत्पन्न अतिरिक्त उत्पादन
   (द) परिवर्तनीय इनपुट की मात्रा जिसको काम लाया जा रहा है तथा स्थिर इनपुट जो काम आ रहा है के बीच अनुपात।
7. घटती सीमान्त प्रत्याय से बोध होता है :
   (अ) घटती औसत परिवर्तनीय लागतें (ब) घटती सीमान्त लागतें
   (स) बढ़ती सीमान्त लागतें (द) घटती औसत स्थायी लागतें।
8. अल्पकाल, जैसा कि अर्थशास्त्री इस वाक्यांश का प्रयोग करते हैं, निम्न द्वारा लक्षित होता है :
   (अ) कम से कम स्थिर उत्पादकीय घटक तथा फर्म न तो उद्योग को छोड़ते हैं और न ही प्रवेश करते हैं
   (ब) एक अवधि जहाँ घटती प्रत्यायों का सिद्धान्त खरा नहीं उतरता
   (स) कोई भी परिवर्तनीय इनपुट नहीं–अर्थात उत्पादन के सभी घटक स्थिर रहते हैं
   (द) सभी इनपुट परिवर्तनीय हों।
9. सीमान्त, औसतन तथा कुल उत्पाद वक्र, जिनका एक ऐसी फर्म द्वारा सामना किया जा रहा है जो अल्पकाल में उत्पादन कर रही है, सभी निम्न सम्बन्धों का प्रदर्शन करती है सिवाय :
   (अ) जब कुल उत्पादन बढ़ रहा है, औसत तथा सीमान्त उत्पादन या तो बढ़ रहा हो सकता है या घट रहा होता है
   (ब) जब सीमान्त उत्पादन ऋणात्मक हो, कुल उत्पादन तथा औसत उत्पादन गिर रहे होते हैं
   (स) जब औसत उत्पादन अपने चरम पर हो, सीमान्त उत्पादन, औसत उत्पादन के बराबर हो तथा कुल उत्पादन बढ़ रहा हो
   (द) जब सीमान्त उत्पादन अधिकतम पर हो, औसत उत्पादन, सीमान्त उत्पादन के बराबर हो तथा कुल उत्पादन बढ़ रहा हो।
10. अर्थशास्त्रियों के लिए अल्पकाल तथा दीर्घकाल के बीच मुख्य अन्तर होता है कि :
   (अ) अल्पकाल में सभी इनपुट स्थिर रहते हैं जबकि दीर्घकाल में सभी इनपुट परिवर्तनीय होते हैं
   (ब) अल्पकाल में फर्म इनपुटों के सबसे कम लागत के संयोजन को पाने के लिए अपने सभी इनपुटों को परिवर्तित करती है
   (स) अल्पकाल में, कम से कम एक फर्म के इनपुट स्तर स्थिर रहते हैं
   (द) दीर्घकाल में फर्म इस बात के सतत निर्णय ले रही होती है कि विद्यमान संयंत्र तथा उपकरणों को कैसे कार्यक्षम तरीके से काम लाया जाये।
11. निम्न में से कौन ''उत्पादन फलन'' की सर्वोत्तम परिभाषा है?
   (अ) बाजार मूल्य तथा आपूर्ति मात्रा के बीच सम्बन्ध
   (ब) फर्म के कुल आगम तथा उत्पादन लागत के बीच सम्बन्ध
   (स) उत्पादन के एक निर्दिष्ट स्तर को बनाने के लिए अपेक्षित इनपुटों की मात्राओं के बीच सम्बन्ध
   (द) इनपुटों की मात्रा तथा फर्म की सीमान्त उत्पादन लागत के बीच सम्बन्ध।
12. ''घटती प्रत्यायों का सिद्धान्त लागू होता है :
   (अ) अल्पकाल, लेकिन दीर्घकाल में नहीं (ब) दीर्घकाल, लेकिन अल्पकाल में नहीं
   (स) अलकाल तथा दीर्घकाल दोनों में (द) न अल्पकाल में, न दीर्घकाल में।
13. घटती प्रत्यायें उत्पन्न होती हैं :
   (अ) जब एक परिवर्तनीय इनपुट की यूनिटें एक स्थिर इनपुट में जोड़ी जाती हैं तथा कुल उत्पादन गिरता है
   (ब) जब एक परिवर्तनीय इनपुट की यूनिटों को एक स्थिर इनपुट में जोड़ा जाता है तथा सीमान्त उत्पादन गिरता है
   (स) जब संयंत्र का आकार दीर्घकाल में बढ़ाया जाता है
   (द) जब स्थिर इनपुट की मात्रा को बढ़ाया जाता है तथा परिवर्तनीय इनपुट के प्रति प्रत्यायें गिरती हैं।

© The Institute of Chartered Accountants of India

निम्न सूचना का प्रयोग करते हुए प्रश्न संख्या 14 से 16 तक उत्तर दें :

श्रम घंटे	कुल उत्पादन	सीमान्त उत्पादन
0	–	–
1	100	100
2	–	80
3	240	–

14. कुल उत्पादन क्या है जब 2 घंटे श्रम लगाया जाता है?
(अ) 80 (ब) 100
(स) 180 (द) 200

15. श्रम के तीसरे घंटे का सीमान्त उत्पादन कितना है?
(अ) 60 (ब) 80
(स) 100 (द) 240

16. श्रम के पहले तीन घंटों का औसत उत्पादन कितना है?
(अ) 60 (ब) 80
(स) 100 (द) 240

17. कौन सी लागत उत्पादन में वृद्धि के साथ निरन्तर बढ़ती जाती है?
(अ) औसत लागत (ब) सीमान्त लागत
(स) स्थिर लागत (द) परिवर्तनीय लागत।

18. कौन सी लागत वक्र कभी भी 'U' आकार में नहीं होती?
(अ) औसत लागत वक्र (ब) सीमान्त लागत वक्र
(स) औसत परिवर्तनीय लागत वक्र (द) औसत स्थिर लागत वक्र

19. अल्पकाल में कुल लागत को स्थिर लागतों तथा परिवर्तनीय लागतों में वर्गीकृत किया जाता है जिनमें से कौन एक परिवर्तनीय लागत है?
(अ) कच्चे माल की लागत (ब) उपकरणों की लागत
(स) विगत ऋणों पर ब्याज भुगतान (द) भवनों के किराये का भुगतान।

20. अल्पकाल में, जब एक फर्म का उत्पादन बढ़ता है तो उसकी औसत स्थिर लागत :
(अ) बढ़ती है (ब) घटती है
(स) सतत बनी रहती है (द) पहले गिरती है तथा फिर बढ़ती है।

21. निम्न में से कौन 'नियोजन वक्र' के रूप में भी जाना जाता है?
(अ) दीर्घकालीन औसत लागत वक्र (ब) अल्पकालीन औसत लागत वक्र
(स) औसत परिवर्तनीय लागत वक्र (द) औसत कुल लागत वक्र।

22. यदि एक फर्म उत्पादन समतुल्य (Production isoquant) पर एक बिन्दु से दूसरे तक गतिशील होती है, तो निम्नलिखित में से क्या घटित नहीं होगा–
(अ) उस अनुपात में परिवर्तन जिसमें इनपुट्स को, उत्पादन तैयार करने के लिए, एकजुट किया जाता है।
(ब) इनपुट्स के सीमान्त उत्पादों के अनुपात में परिवर्तन।
(स) तकनीकी प्रतिस्थापन की सीमान्त दर में परिवर्तन।
(द) उत्पादन के स्तर में परिवर्तन।

© The Institute of Chartered Accountants of India

23. निम्न में से किस के साथ सीमान्त लागत की विचारधारा गहनता से सम्बन्धित है?
(अ) परिवर्तनीय लागत (ब) स्थिर लागत
(स) अवसर लागत (द) आर्थिक लागत।

24. निम्न में से कौन सा कथन सत्य है?
(अ) जब औसत लागत बढ़ रही होती है तो सीमान्त लागत को भी बढ़ना चाहिये
(ब) जब औसत लागत बढ़ रही होती है तो सीमान्त लागत को गिर रहा होना चाहिये
(स) जब औसत लागत बढ़ रही होती है तो सीमान्त लागत औसत लागत के ऊपर होती है
(द) जब औसत लागत गिर रही होती है तो सीमान्त लागत बढ़ रही होनी चाहिये।

25. निम्न में से कौन ''स्पष्ट लागत'' का एक उदाहरण है?
(अ) एक बड़ी फर्म में एक कर्मचारी के रूप में काम करके एक मालिक जो मजदूरी कमा सका होता
(ब) वह आय जो फर्म द्वारा स्वामित्वाधीन संसाधनों द्वारा वैकल्पिक उपयोगों में कमाई गई हो सकती
(स) फर्म द्वारा मजदूरी का भुगतान
(द) एक फर्म द्वारा कमाये गये सामान्य लाभ।

26. निम्न में से कौन ''अन्तर्मुखी लागत'' का एक उदाहरण है?
(अ) ब्याज जो संवर्द्धन की वित्त व्यवस्था हेतु फर्म द्वारा प्रयुक्त रोकी गई आयों पर कमाया गया हो सकता है
(ब) उस भवन के लिए फर्म द्वारा चुकाया गया किराया जिसमें वह स्थित है
(स) एक बैंक से उधार लिये गये कोषों के लिए फर्म द्वारा किया गया ब्याज भुगतान
(द) फर्म द्वारा मजदूरी का भुगतान।

प्रश्न संख्या 27 से 29 तक के उत्तर देने के लिए निम्न आँकड़ों का प्रयोग करें :

उत्पादन (O)	0	1	2	3	4	5	6
कुल लागत (TC)	240 रु.	330 रु.	410 रु.	480 रु.	540 रु.	610 रु.	690 रु.

27. उत्पादन की 2 यूनिटों की औसत स्थिर लागत है :
(अ) 80 रु. (ब) 85 रु.
(स) 120 रु. (द) 205 रु.

28. उत्पादन की छठी यूनिट की सीमान्त लागत है :
(अ) 133 रु. (ब) 75 रु.
(स) 80 रु. (द) 450 रु.

29. घटती सीमान्त प्रत्यायें किन यूनिटों के बीच उत्पन्न होनी शुरू होती हैं :
(अ) 2 तथा 3 (ब) 3 तथा 4
(स) 4 तथा 5 (द) 5 तथा 6

30. सीमान्त लागत को परिभाषित किया जाता है :
(अ) उत्पादन में एक यूनिट के परिवर्तन के कारण कुल लागत में परिवर्तन
(ब) कुल लागत को उत्पादन द्वारा विभाजित करके आयी राशि
(स) एक इनपुट में एक यूनिट के परिवर्तन के कारण उत्पादन में परिवर्तन
(द) कुल उत्पादन को इनपुट की मात्रा से विभाजित करके आई राशि।

31. निम्न में से कौन सीमान्त लागत फलन तथा औसत लागत फलन के बीच सम्बन्ध के लिए सही है?
(अ) यदि MC बड़ा है ATC से तो ATC गिर रहा है
(ब) ATC वक्र MC वक्र को न्यूनतम MC पर काटता है
(स) MC वक्र ATC वक्र को न्यूनतम ATC पर काटता है
(द) यदि MC कम है ATC से तो ATC बढ़ रहा है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

32. निम्न में से कौन सा कथन औसत लागत कार्यों के बीच सम्बन्ध की दृष्टि से सही है :
(अ) ATC = AFC – AVC (ब) AVC = AFC + ATC
(स) AFC = ATC + AVC (द) AFC = ATC – AVC

33. निम्न में से कौन फर्म को लागत फलन का एक निर्धारक तत्व नहीं है?
(अ) उत्पादन फलन (ब) श्रम का मूल्य
(स) कर (द) फर्म के उत्पादन का मूल्य।

34. निम्न में से कौन सा विवरण फर्म के लागत फलनों के बीच सम्बन्धों के सन्दर्भ में सही है?
(अ) TC = TFC – TVC (ब) TVC = TFC – TC
(स) TFC = TC – TVC (द) TC = TVC – TFC

35. मान लेते हैं कि अल्पकाल में उत्पादन बढ़ता है। कुल लागत . . . . . :
(अ) केवल स्थायी लागतों में वृद्धि के कारण बढ़ती है
(ब) केवल परिवर्तन लागतों में वृद्धि के कारण बढ़ती है
(स) स्थिर तथा परिवर्तनीय दोनों ही लागतों में वृद्धि के कारण बढ़ती है
(द) घटती है यदि फर्म घटती प्रत्यायों के क्षेत्र में हो तो।

36. निम्न में से कौन से कथन जो दीर्घकालीन औसत लागत वक्र के सम्बन्ध में हैं गलत हैं?
(अ) यह उत्पादन के प्रत्येक स्तर के उत्पादन हेतु कम से कम लागत इनपुट संयोजन की अभिव्यक्ति करता है
(ब) यह अल्पकालीन औसत लागत वक्रों की एक श्रृंखला से उभरता है
(स) दीर्घकालीन औसत लागत वक्र के न्यूनतम बिन्दु पर अल्पकालीन लागत वक्र उत्पादन के सभी स्तरों के लिए न्यूनतम लागत संयंत्र आकार की अभिव्यक्ति करता है
(द) जैसे-जैसे उत्पादन बढ़ता जाता है फर्म द्वारा लगाई गई पूँजी की राशि वक्र के साथ-साथ बढ़ती जाती है।

37. निम्न में किसके कारण दीर्घकालीन औसत कुल लागत वक्र का ऋणात्मक ढलुआँ भाग (अर्थात गिर रहा भाग) अंजाम पाता है :
(अ) पैमाने की बरबादियाँ
(ब) घटती प्रत्यायें
(स) एक बड़ी फर्म की विभिन्न गतिविधियों के समन्वय में सामने आ रही कठिनाइयाँ
(द) उत्पादकता में वृद्धि जो विशिष्टीकरण से उभरती हैं।

38. निम्न में से किसके कारण दीर्घकालीन औसत कुल लागत वक्र का धनात्मक ढलुआँ (अर्थात बढ़ रहा) भाग अंजाम पाता है :
(अ) पैमाने की बरबादियाँ
(ब) घटती प्रत्यायें
(स) फर्म बड़ी मात्रा की उत्पादन तकनीकों का लाभ लेने में समर्थ हो जाती है क्योंकि जैसे ही वह अपने उत्पादन को बढ़ाती है
(द) उत्पादकता में वृद्धि जो विशिष्टीकरण का परिणाम है।

39. एक फर्म की औसत कुल लागत उत्पादन की 5 यूनिटों पर है 300 रु. तथा उत्पादन की 6 यूनिटों पर है 320 रु., तो छठी यूनिट के उत्पादन की सीमान्त लागत है :
(अ) 20 रु. (ब) 120 रु.
(स) 320 रु. (द) 420 रु.।

© The Institute of Chartered Accountants of India

40. एक फर्म के 7 यूनिटों के उत्पादन पर कुल औसत लागत 150 रु. है तथा उसको उत्पादन के अपने स्थिर घटकों के प्रति 350 रु. चुकाने पड़ते हैं चाहे वह उत्पादन करे या न करे। कुल औसत लागत में परिवर्तनीय लागतों का कुल कितना भाग है?
(अ) 200 रु. (ब) 50 रु.
(स) 300 रु. (द) 100 रु.।

41. एक फर्म के 5 यूनिटों के उत्पादन पर परिवर्तनीय लागत 1,000 रु. है। यदि स्थिर लागतें 400 रु. है तो उत्पादन की 5 यूनिटों की कुल औसत लागत क्या होगी?
(अ) 280 रु. (ब) 60 रु.
(स) 120 रु. (द) 1,400 रु.।

42. एक फर्म की औसत स्थायी लागत उत्पादन की 6 इकाइयों पर 20 रु. है। उत्पादन की 4 यूनिटों पर यह कितनी होगी?
(अ) 60 रु. (ब) 30 रु.
(स) 40 रु. (द) 20 रु.

43. निम्न में से कौन से विवरण सही हैं?
(अ) एक डॉक्टर की सेवाएँ उत्पादन मानी जाती हैं
(ब) आदमी पदार्थ बना सकता है
(स) एक गृहणी की सेवाएँ उत्पादकीय मानी जाती हैं
(द) जब एक आदमी एक मेज बनाता है तो वह पदार्थ तैयार करता है।

44. निम्न में से कौन सा एक उपक्रमी का एक कार्य है?
(अ) एक व्यावसायिक उपक्रम का प्रारम्भ (ब) जोखिम सहना
(स) आविष्कार करना (द) उपरोक्त सभी।

45. एक निर्दिष्ट उत्पादकीय प्रौद्योगिकी के वर्णन में अल्पकाल को सर्वोत्तम तरीके से समझाया जा सकता है एक ऐसी अवधि जो समाप्त हो :
(अ) अब से 6 महीने तक
(ब) अब से 5 साल तक
(स) जब तक सभी इनपुट स्थिर रहें उतनी लम्बी अवधि
(द) तब तक जब तक कम से कम एक इनपुट स्थिर रहे।

46. यदि पैमाने की घटती प्रत्यायें विद्यमान हैं और सभी इनपुट 10% से बढ़ाये जायें तो :
(अ) आऊटपुट 10% से गिरेगा
(ब) आऊटपुट 10% से बढ़ेगा
(स) आऊटपुट 10% की अपेक्षा कम से बढ़ेगा
(द) आऊटपुट 10% की अपेक्षा अधिक से बढ़ेगा।

47. उत्पादन फलन इनपुटों के एक निर्दिष्ट संयोजन तथा निम्न से किसके बीच सम्बन्ध होता है :
(अ) एक अन्य संयोजन जो वैसा ही उत्पादन दे
(ब) सर्वाधिक परिणामजन्य उत्पादन
(स) एक उत्पादन में एक यूनिट की वृद्धि से उत्पन्न उत्पादन में वृद्धि
(द) उत्पादन के सभी स्तर जो उन इनपुटों से उत्पन्न हो सकें।

48. यदि श्रम का सीमान्त उत्पादन श्रम के औसत उत्पादन से नीचे हो तो यह सत्य होना चाहिये कि :
(अ) श्रम का सीमान्त उत्पादन ऋणात्मक है (ब) श्रम का सीमान्त उत्पादन शून्य है
(स) श्रम का औसत उत्पादन गिर रहा है (द) श्रम का सीमान्त उत्पादन ऋणात्मक है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

49. श्रम का औसत उत्पादन अधिकतम किया जाता है जब श्रम का सीमान्त उत्पादन :
(अ) श्रम के औसत उत्पादन के बराबर हो (ब) शून्य के बराबर हो
(स) अधिकतम किया जाये (द) उपरोक्त में कोई नहीं।

50. परिवर्तनीय अनुपातों का सिद्धान्त निम्न सभी मान्यताओं के अन्तर्गत निकाला जाता है सिवाय इस मान्यता के कि :
(अ) प्रौद्योगिकी बदल रही है
(ब) ऐसे कुछ इनपुट हैं जिनकी मात्रा स्थिर रखी जाती है
(स) हम केवल भौतिक इनपुटों पर विचार करते हैं, न कि मौद्रिक अर्थों में आर्थिक तौर पर लाभकारी इनपुटों पर
(द) प्रौद्योगिकी निर्दिष्ट तथा स्थिर।

51. उत्पादन प्रक्रिया क्या होती है?
(अ) भौतिक इनपुटों तथा भौतिक आऊटपुट के बीच तकनीकी सम्बन्ध।
(ब) उत्पादन के स्थिर घटकों तथा परिवर्तनीय घटकों के बीच सम्बन्ध।
(स) उत्पादन के एक घटक तथा उसके द्वारा उत्पन्न उपादेयता के बीच सम्बन्ध।
(द) उत्पादित उत्पादन की मात्रा तथा आऊटपुट को उत्पादित करने के लिए लिये गये समय के बीच सम्बन्ध।

52. उत्पादन के नियम . . . . . शामिल नहीं करते।
(अ) पैमाने की प्रत्यायों (ब) एक घटक के प्रति घटती प्रत्यायों के नियम
(स) परिवर्तनीय अनुपातों के नियम (द) घटकों का कम से कम लागत का संयोजन

53. एक Isoquant प्रदर्शित करता है–
(अ) दो इनपुट्स के सभी वैकल्पिक संयोजन जिनको पूरी तरह से उत्पादन के एक निर्दिष्ट संख्या उपयोग करके तथा सर्वोत्तम सम्भव तरीके से करके उत्पादित किया जा सकता है।
(ब) दो उत्पादों के सभी वैकल्पिक संयोजन जिनके बीच एक उत्पादक उदासीन हो जाता है क्योंकि वे समान लाभ उत्पन्न करती हैं।
(स) दो इनपुट्स के सभी वैकल्पिक संयोजन जो समान कुल उत्पाद उत्पन्न करें।
(द) दोनों (ब) तथा (स)।

54. पैमाने की मितव्ययताएँ विद्यमान रहती हैं क्योंकि जैसे एक फर्म दीर्घकाल में अपना आकार बढ़ाती है–
(अ) श्रम तथा प्रबन्ध अपनी गतिविधियों में और अधिक विशिष्टता पा जाते हैं।
(ब) एक बड़े इनपुट क्रेता के रूप में, फर्म अपेक्षाकृत नीची लागत पर वित्त प्राप्त कर सकता है तथा प्रति इकाई नीची लागत पर इनपुट्स खरीदता है।
(स) फर्म उत्पादन में और अधिक परिष्कृत प्रौद्योगिकी लागू करना सम्भव बना पाती है।
(द) ये सभी।

55. उत्पादन कार्य–
(अ) प्रयुक्त इनपुट्स की मात्रा तथा उत्पादन की परिणामजन्य मात्रा के बीच सम्बन्ध होता है।
(ब) इनपुट्स के एक दिये गये संयोजन से अधिकतम प्राप्ति योग्य उत्पादन के बारे में हमको बताता है।
(स) इनपुट्स तथा किसी उत्पाद के उत्पादन के बीच प्रौद्योगिकी सम्बन्ध की अभिव्यक्ति करता है।

56. नीचे उत्पादन प्रक्रिया को दिखाया गया है :

श्रमिकों की संख्या	उत्पादन
0	0
1	23
2	40
3	50

© The Institute of Chartered Accountants of India

(अ) श्रम का सतत सीमान्त उत्पाद (ब) श्रम का घटता सीमान्त उत्पाद
(स) पैमाने की बढ़ती प्रत्याय (द) श्रम का बढ़ता सीमान्त उत्पाद

57. निम्न में कौन अल्पकाल में एक परिवर्तनीय लागत है?
(अ) कारखाने का किराया
(ब) कारखाने श्रम को चुकाया गया वेतन
(स) ऋण ली गई वित्तीय पूँजी पर ब्याज भुगतान
(द) कारखाना उपकरण हेतु पट्टे पर भुगतान।

58. उत्पादन का प्रभावी पैमाना उत्पादन की वह मात्रा होती है जो न्यूनतम करता है :
(अ) औसत स्थिर लागत (ब) औसत कुल लागत
(स) औसत परिवर्तनीय लागत (द) सीमान्त लागत

59. अल्पकाल में, फर्म का उत्पाद वक्र प्रदर्शित करता है कि
(अ) कुल उत्पाद घटना शुरू कर देता है जब औसत उत्पाद घटने लगता है लेकिन बढ़ना जारी रखता है घटती दर पर।
(ब) जब सीमान्त उत्पाद औसत उत्पाद के बराबर होता है तो औसत उत्पाद घट रहा होता है लेकिन अपने अधिकतम पर।
(स) जब सीमान्त उत्पाद वक्र नीचे से औसत उत्पाद वक्र को काटता है तो औसत उत्पाद सीमान्त उत्पाद के बराबर होता है।
(द) दूसरे चरण में, कुल उत्पाद घटती दर पर बढ़ता है तथा इस चरण के अन्त में अधिकतम पर पहुँचता है।

60. एक स्थिर इनपुट को . . . . . के रूप में परिभाषित किया जाता है।
(अ) वह इनपुट जिसकी मात्रा अपने उत्पादन को परिवर्तित करने के लिए कम्पनी की इच्छा के प्रत्युत्तर में, अल्पकाल में शीघ्रतापूर्वक बदली जा सकती है।
(ब) वह इनपुट जिसकी मात्रा अपने उत्पादन को परिवर्तित करने के लिए कम्पनी की इच्छा के प्रत्युत्तर में, सरलतापूर्वक परिवर्तित की जा सकती है।
(स) वह इनपुट जिसकी मात्राएँ उत्पादन के स्तर को बढ़ाने या घटाने के लिए इच्छा के प्रत्युत्तर में सरलतापूर्वक बदली जा सकती हैं।
(द) वह इनपुट जिसकी माँग उत्पादन के स्तर को बढ़ाने या घटाने की इच्छा के प्रत्युत्तर में सरलतापूर्वक बदला जा सकता है।

61. औसत उत्पाद को निम्न के रूप में परिभाषित किया जाता है।
(अ) कुल उत्पाद ÷ कुल लागत (ब) कुल उत्पाद ÷ सीमान्त उत्पाद
(स) कुल उत्पाद ÷ परिवर्तनीय इनपुट (द) सीमान्त उत्पाद ÷ परिवर्तनीय इनपुट

62. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन सही है?
(अ) उत्पादन कार्य के परिवर्तनीय बिन्दु (inflection point) के पश्चात, परिवर्तनीय इनपुट का अपेक्षाकृत अधिक उपयोग सीमान्त उत्पादन में कटौती को प्रेरित करता है।
(ब) घटती सीमान्त प्रत्यायों के अपरिहार्य बिन्दु पर पहुँचने से पूर्व, प्राप्त हुए उत्पादन की मात्रा एक बढ़ती दर से बढ़ सकती है।
(स) पहला चरण उस रेंज के सम्बद्ध होता है जिसमें AP बढ़ रहा होता है परिवर्तनीय इनपुट्स की बढ़ती मात्राओं का उपयोग करने के परिणामस्वरूप।
(द) उपरोक्त सभी

© The Institute of Chartered Accountants of India

63. सीमान्त उत्पाद, गणितीय तौर पर निम्न का ढाल होता है।
(अ) कुल उत्पाद वक्र (ब) औसत उत्पाद वक्र
(स) सीमान्त उत्पाद वक्र (द) अन्तर्मुखी उत्पाद वक्र

64. मान लेते हैं कि एक परिवर्तनीय इनपुट की पहली चार इकाइयाँ तत्सम्बद्ध कुल उत्पादनों 200, 350, 450 तथा 500 का सृजन करती हैं। इनपुट की तीसरी यूनिट का सीमान्त उत्पाद है :
(अ) 50 (ब) 100
(स) 150 (द) 200

65. एक फर्म की स्थायी लागत के सम्बन्ध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?
(अ) चूँकि एक फर्म के लिए स्थिर इनपुट्स अल्पकाल में परिवर्तित नहीं किये जा सकते हैं अत: TFC सतत रहती है, सिवाय तब के जब स्थिर इनपुट्स के मूल्य परिवर्तित होते हैं।
(ब) TFC विद्यमान बना रहता है यहाँ तक कि जब अल्पकाल में उत्पादन को रोक दिया जाता है लेकिन वे दीर्घकाल में विद्यमान रहते हैं यहाँ तक कि जब उत्पादन को रोका नहीं जाता।
(स) कुल स्थिर लागतें (TFC) को परिभाषित किया जा सकता है–अल्पकाल में उत्पादन से जुड़े सभी स्थिर इनपुट्स की लागतों का कुल योग।
(द) अल्पकाल में, एक फर्म की स्थिर लागत से बचा नहीं जा सकता है यहाँ तक कि जब उत्पादन को रोक दिया जाता है।

66. एक परिवर्तनीय इनपुट की पहली चार यूनिटों के लिए घटती सीमान्त प्रत्याय को कुल उत्पाद क्रमबद्धता द्वारा प्रदर्शित किया जाता है :
(अ) 50, 50, 50, 50 (ब) 50, 110, 180, 260
(स) 50, 100, 150, 200 (द) 50, 90, 120, 140

67. नीचे दिये गये प्रश्न के उत्तर के लिए निम्न चित्र का प्रयोग करें–

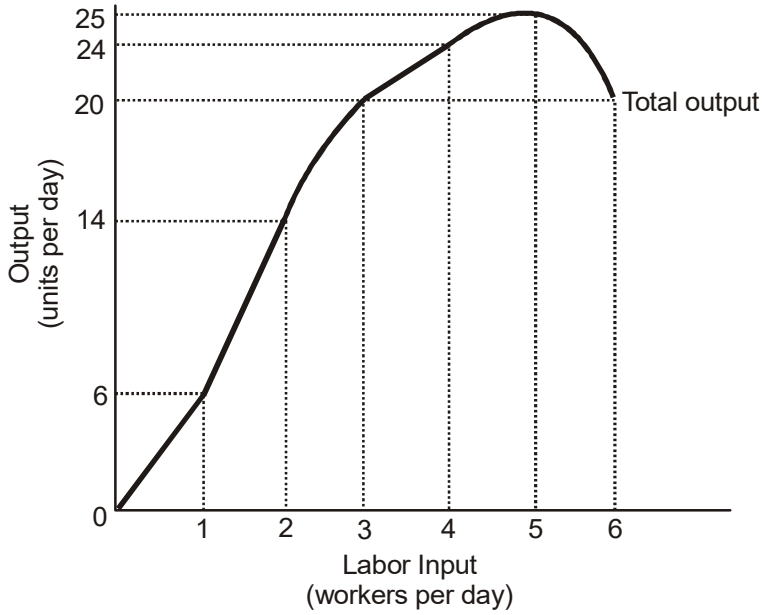

© The Institute of Chartered Accountants of India

श्रम की तीसरी यूनिट का सीमान्त भौतिक उत्पादन है . . . . . श्रम की MP ऋणात्मक होती है।

(अ) छ:; चौथा (ब) छ:; तीसरा

(स) छ:; पाँचवाँ (द) छ:; छठा

68. उत्पादन के तीनों चरणों के तीसरे में :
   (अ) सीमान्त उत्पाद वक्र का घनात्मक ढाल होता है।
   (ब) सीमान्त उत्पाद वक्र पूरी तरह से औसत उत्पादन वक्र के नीचे रहता है।
   (स) कुल उत्पाद बढ़ता है।
   (द) सीमान्त उत्पाद घनात्मक होता है।
69. जब सीमान्त लागतें औसत कुल लागतों के नीचे हों :
   (अ) औसत स्थिर लागतें बढ़ रही होती हैं। (ब) औसत कुल लागतें गिर रही होती हैं।
   (स) औसत कुल लागतें बढ़ रही होती हैं। (द) औसत कुल लागतें न्यूनतम हो जाती हैं।
70. एक फर्म का दीर्घकालीन औसत कुल लागत वक्र होता है–
   (अ) अपने दीर्घकालीन सीमान्त लागत वक्र के समान।
   (ब) साथ ही उसका दीर्घकालीन आपूर्ति वक्र क्योंकि यह मूल्य तथा सप्लाई की गई मात्रा के बीच सम्बन्ध का वर्णन करता है।
   (स) वास्तव में, अल्पकाल में अनुकूलतम संयंत्र का औसत कुल लागत वक्र, क्योंकि यह कम से कम लागत पर उत्पादन का प्रयास करता है।
   (द) अल्पकालीन औसत कुल लागत के सभी वक्रों की स्पर्शी।
71. दीर्घकाल में, यदि एक अत्यन्त छोटा कारखाना अपनी गतिविधियों के पैमाने को बढ़ाना चाहता है तो यह सम्भव है कि वह प्रारम्भ में अनुभव करेगा :
   (अ) प्रदूषण स्तर में वृद्धि (ब) पैमाने की अमितव्ययताएँ
   (स) पैमाने की मितव्ययताएँ (द) पैमाने की सतत प्रत्यायें।
72. एक फर्म का दीर्घकालीन औसत लागत वक्र होता है–
   (अ) उसके दीर्घकालीन सीमान्त लागत वक्र के समान क्योंकि सभी घटक परिवर्तनीय होते हैं।
   (ब) साथ ही उसका दीर्घकालीन कुल लागत वक्र क्योंकि यह दीर्घकाल में सप्लाई की गई मात्रा तथा लागत के सम्बन्ध का वर्णन करता है।
   (स) वास्तव में, अल्पकाल में अनुकूलतम संयंत्र का औसत कुल लागत वक्र क्योंकि यह कम से कम लागत पर उत्पादन का प्रयास करता है।
   (द) सभी अल्पकालीन औसत लागत वक्र के स्पर्शी तथा उत्पादन के प्रत्येक स्तर के उत्पादन हेतु न्यूनतम औसत कुल लागत की अभिव्यक्ति करता है।
73. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन पैमाने के प्रति बढ़ती प्रत्यायों का वर्णन करता है?
   (अ) प्रयुक्त सभी इनपुट्स को दुगुना करना उत्पादन को दुगना करने की ओर ले जाता है।
   (ब) इनपुट्स को 50% से बढ़ाना उत्पादन में 25% की वृद्धि उत्पन्न करता है।
   (स) इनपुट्स को 1/4 से बढ़ाना उत्पादन को 1/3 से बढ़ाने की ओर ले जाता है।
   (द) उपरोक्त में से कोई नहीं।
74. उत्पादन की 9वीं इकाई के उत्पादन की एक फर्म की सीमान्त लागत ₹ 20 है। उत्पादन के उसी स्तर पर औसत लागत ₹ 15 है। निम्न में से क्या सही होना चाहिये?
   (अ) सीमान्त लागत तथा औसत लागत दोनों गिर रहे हैं।
   (ब) सीमान्त लागत तथा औसत लागत दोनों बढ़ रहे हैं।
   (स) सीमान्त लागत बढ़ रही है तथा औसत लागत गिर रही है।
   (द) यह बताना असम्भव होता है यदि दोनों में से कोई भी वक्र बढ़ रहा हो या गिर रहा हो।

© The Institute of Chartered Accountants of India

75. अन्तर्मुखी लागत को परिभाषित किया जा सकता है–
   (अ) व्यवसाय में लगाये गये स्वत: स्वामीत्वाधीन घटकों के लिए फर्म के गैर-मालिकों को दिए गये मौद्रिक भुगतान तथा इसलिए लेखा पुस्तकों में नहीं लिखे जाते।
   (ब) व्यवसाय में लगाये गये स्वत: स्वामीत्वाधीन घटकों के लिए फर्म के मालिकों को न किये गये भुगतान तथा इसीलिए लेखा पुस्तकों में नहीं लिखे जाते।
   (स) मौद्रिक भुगतान जो स्वत: स्वामीत्वाधीन तथा लगाये गये संसाधन जिनको उनके अगले सर्वोत्तम वैकल्पिक रोजगार में अर्जित किया जा सका हो।
   (द) भौतिक भुगतान जो स्वत: स्वामीत्वाधीन तथा लगाये गये संसाधन अपने सर्वोत्तम उपयोग में कमाते हैं तथा इसीलिए लेखा पुस्तकों में रिकॉर्ड किये जाते हैं।
76. एक साहसी का सबसे महत्वपूर्ण कार्य है–
   (अ) आविष्कार करना
   (ब) उत्तरदायित्व के भाव को वहन करना
   (स) वित्त
   (द) लाभ कमाना।
77. उत्पादन की आर्थिक लागतें उत्पादन की लेखांकन लागतों से भिन्न होती हैं क्योंकि–
   (अ) आर्थिक लागतें किराया लिये गये संसाधनों के लिए व्ययों का समावेश करती हैं जबकि लेखांकन लागतें ऐसा नहीं करतीं।
   (ब) लेखांकन लागतें अवसर लागतों का समावेश करती हैं जिनको चुकाई गई लागतों को पाने के लिए बाद में घटाया जाता है।
   (स) लेखांकन लागतें किराया लिये गये संसाधनों के लिए व्ययों का समावेश करती हैं जबकि आर्थिक लागतें नहीं।
   (द) आर्थिक लागतें फर्म की अवसर लागत को जोड़ती हैं जो अपने निजी संसाधनों का प्रयोग करती हैं।
78. नीचे दिये गये चित्र में, सम्भावित कारण क्या है–क्यों औसत परिवर्तनीय लागत वक्र औसत कुल लागत वक्र के पास पहुँचता है जैसे-जैसे उत्पादन बढ़ता है?

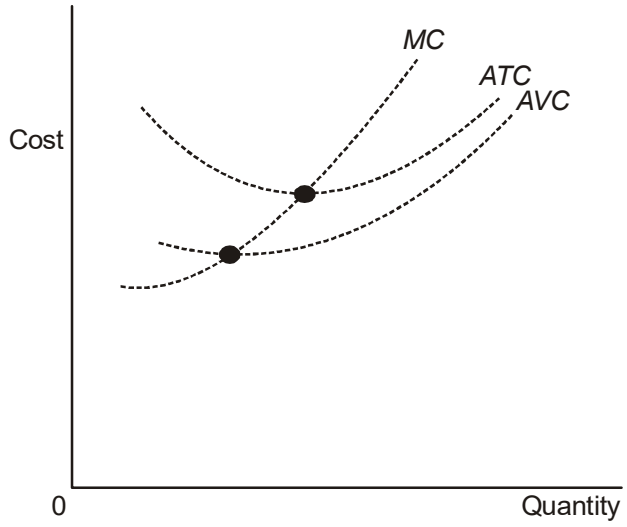

   (अ) स्थिर लागतें गिर रही हैं जबकि कुल लागतें बढ़ते उत्पादन पर बढ़ रही होती हैं।
   (ब) कुल लागतें बढ़ रही हैं तथा औसत लागतें भी बढ़ रही हैं।
   (स) सीमान्त लागतें औसत परिवर्तनीय लागतों के ऊपर हैं जैसे-जैसे उत्पादन बढ़ता है।
   (द) औसत स्थिर लागतें गिर रही होती हैं जैसे-जैसे उत्पादन बढ़ता है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

79. सीमान्त लागत बदलती है . . . . . में परिवर्तनों के कारण
    (अ) कुल लागत (ब) औसत लागत
    (स) परिवर्तनीय लागत (द) उत्पादन की मात्रा
80. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
    (अ) स्थिर लागतें उत्पादन में परिवर्तन के साथ परिवर्तित होती हैं।
    (ब) यदि हम कुल परिवर्तनीय लागत तथा कुल स्थिर लागत को जोड़ते हैं तो हम औसत लागत पाते हैं।
    (स) सीमान्त लागत कुल लागत को उत्पादित इकाइयों की संख्या द्वारा भाग देकर प्राप्त होती है।
    (द) कुल लागत स्थिर लागत तथा कुल परिवर्तनीय लागत को जोड़कर प्राप्त की जाती है।
81. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?
    (अ) LAC वक्र को किसी फर्म का नियोजन वक्र भी कहा जाता है।
    (ब) कुल आगम = प्रति इकाई मूल्य × बेची गई इकाइयों की संख्या।
    (स) अवसर लागत को वैकल्पिक लागत भी कहा जाता है।
    (द) यदि कुल आगम को बेची गई इकाइयों की संख्या से विभाजित किया जाये तो हमको सीमान्त आगम प्राप्त होता है।

उत्तर (Answers)

1.	(अ)	2.	(अ)	3.	(द)	4.	(ब)	5.	(ब)	6.	(ब)
7.	(स)	8.	(अ)	9.	(द)	10.	(स)	11.	(स)	12.	(अ)
13.	(ब)	14.	(स)	15.	(अ)	16.	(ब)	17.	(द)	18.	(द)
19.	(अ)	20.	(ब)	21.	(अ)	22.	(द)	23.	(अ)	24.	(स)
25.	(स)	26.	(अ)	27.	(स)	28.	(स)	29.	(स)	30.	(अ)
31.	(स)	32.	(द)	33.	(द)	34.	(स)	35.	(ब)	36.	(स)
37.	(द)	38.	(अ)	39.	(द)	40.	(द)	41.	(अ)	42.	(ब)
43.	(अ)	44.	(द)	45.	(द)	46.	(स)	47.	(ब)	48.	(स)
49.	(अ)	50.	(अ)	51.	(अ)	52.	(द)	53.	(स)	54.	(द)
55.	(द)	56.	(ब)	57.	(ब)	58.	(ब)	59.	(द)	60.	(ब)
61.	(स)	62.	(द)	63.	(अ)	64.	(ब)	65.	(ब)	66.	(द)
67.	(द)	68.	(ब)	69.	(ब)	70.	(द)	71.	(स)	72.	(द)
73.	(स)	74.	(ब)	75.	(ब)	76.	(अ)	77.	(द)	78.	(द)
79.	(स)	80.	(द)	81.	(द)						

© The Institute of Chartered Accountants of India